Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 19, Issue No. 6, December-2022, ISSN 2230-7540

लखनऊ में ज़री ज़रदोज़ी उद्योग में आने वाली चुनौतियाँ

Samriddhi Kushwaha[1]*, Dr. Sandhya Srivastava[2], Dr. Kamlesh Kumar[3]

[1] Research Scholar, Bhagwant University

[2] Phd Guide, Bhagwant University

[3] Co-Guide, Bhagwant University

सार- लखनऊ में ज़री ज़रदोज़ी उद्योग, जो अपनी जटिल कढ़ाई और शिल्प कौशल के लिए प्रसिद्ध है, को असंख्य चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जो इसके विकास और स्थिरता को प्रभावित करते हैं। यह सार जरी जरदोजी व्यापार में शामिल कारीगरों और व्यवसायों के सामने आने वाली प्रमुख चुनौतियों का एक संक्षिप्त अवलोकन प्रदान करता है। चुनौतियाँ आर्थिक कारकों से लेकर तकनीकी सीमाओं और सामाजिक-सांस्कृतिक पहलुओं तक हैं, जो सामूहिक रूप से उद्योग की गतिशीलता को प्रभावित करती हैं। इन चुनौतियों को समझना, उनसे निपटने के लिए रणनीति तैयार करने, इस पारंपरिक शिल्प के संरक्षण और समृद्धि को सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है।

कीवर्ड- ज़री ज़रदोज़ी, लखनऊ, चुनौतियाँ

-----------------------------------x-----------------------------------

परिचय

भारत जैसे पारंपरिक देश में, हस्तशिल्प एक महत्वपूर्ण चींटी-रूप है जो सांस्कृतिक निरंतरता को दर्ज करता है। विकास की प्रक्रिया निर्बाध है। राजवंश आते हैं और चले जाते हैं, लेकिन वे किसी राष्ट्र की सांस्कृतिक छवि में अपने प्रभाव का बहुत कम निशान छोड़ते हैं।

भारतीय समाज में कलात्मक और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का एक लंबा इतिहास रहा है। पोरवाल (2018)।

भारत में हाथ से बुने और हस्तनिर्मित वस्त्रों की एक समृद्ध परंपरा है। यह दुनिया की सबसे जीवंत और विशिष्ट शिल्प परंपराओं में से एक का घर है। नाइक (1996), कुमारी (2021) इनमें से कुछ पर शोध किया गया है और अच्छी तरह से प्रलेखित किया गया है जबकि कई को अभी भी सावधानीपूर्वक अध्ययन और संग्रहीत करने की आवश्यकता है। इनमें से अधिकांश मौखिक परंपराओं के रूप में जीवित हैं जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक मौखिक रूप से पारित होती हैं और शायद ही कभी कोई औपचारिक रिकॉर्ड होता है। इस प्रकार, इन शिल्पों का दस्तावेजीकरण करना और भी महत्वपूर्ण हो जाता है अन्यथा ये समय के साथ लुप्त हो सकते हैं। वास्तव में, भारत की बहुत सी शिल्पकलाएँ विलुप्त होने के कगार पर हैं और लुप्तप्राय श्रेणी में हैं, जैसे राजस्थान की मेंढ छपाई, गुजरात की रोगन छपाई इत्यादि इत्यादि।

ऐतिहासिक क्रम में मानवीय गतिविधियों के ज्ञान और समझ को हस्तकला या हस्तशिल्प द्वारा सर्वोत्तम रूप से समझा जा सकता है। जीवन के पैटर्न में बदलाव के बावजूद यह अभी भी व्यक्तिगत और सामाजिक कार्यों के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है और उस सामाजिक प्रक्रिया को दर्शाता है जिसके माध्यम से अनगिनत मानव समुदाय समय की तीर रेखा से नीचे चले गए हैं। इसलिए, भारत के सामाजिक और व्यवहारिक पैटर्न में, हस्तशिल्प की एक बड़ी सामाजिक प्रासंगिकता प्रतीत होती है।

पिछले कुछ दशकों के दौरान शिल्प और शिल्पकारों पर कुछ महत्वपूर्ण काम हुए हैं। कुछ अध्ययन कपड़ा कढ़ाई के लिए समर्पित हैं, अन्य डिज़ाइनों पर प्रकाश डालते हैं और शैलीगत प्रशंसा पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं (धमीजा, 2016)।

www.ignited.in

लेकिन किसी विशेष शिल्प का विस्तार से अध्ययन करने, उसकी उत्पत्ति पर ध्यान केंद्रित करने, तकनीकी अंत सौंदर्यशास्त्र के संदर्भ में उसके विकास का पता लगाने, जिसमें सामाजिक-आर्थिक जीवन में परिवर्तन के कारण होने वाले बदलते लक्षण भी शामिल हैं, का प्रयास नहीं किया गया है। इस शोध कार्यकर्ता का उद्देश्य लखनऊ में जरी जरदोजी उद्योग में होने वाले मुद्दों और चुनौतियों पर अध्ययन कराना है।

कार्यप्रणाली

यह अध्ययन स्व-डिज़ाइन किए गए प्रश्नावली, साक्षात्कार और कारीगरों, उनके परिवार के सदस्यों, स्थानीय व्यापारियों, निर्यातकों, क्लस्टर नेताओं और गैर सरकारी संगठनों के साथ चर्चा पर आधारित एकीकृत दृष्टिकोण पर आधारित है। इस अध्ययन में यादृच्छिक चयन लागू किया गया क्योंकि यह चयन पूर्वाग्रहों के प्रभाव को कम करता है और अध्ययन की बाहरी वैधता को बढ़ाता है। इसलिए, यह विधि यह सुनिश्चित करने में मदद करती है कि नमूना समग्र रूप से कारीगर की आबादी का प्रतिनिधि था (मार्क्ज़िक, जी, डीमैटियो, डी, और फेस्टिंगर, डी, 2005)। कुल 100 कारीगरों, पचास उप-अनुबंधित या स्वतंत्र कारीगरों और पचास कारखाना कर्मचारियों को यादृच्छिक रूप से चुना गया और सर्वेक्षण किया गया।

मिश्रित दृष्टिकोण अपनाया गया जिसमें सर्वेक्षण जैसे मात्रात्मक तरीकों के साथ-साथ साक्षात्कार जैसे गुणात्मक तरीके भी शामिल थे। सर्वेक्षण अध्ययन के लिए सावधानीपूर्वक चुने गए विभिन्न कारकों और चरों में पैटर्न को मापने, रैंकिंग, वर्गीकृत करने और पहचानने में और उचित सामान्यीकरण पर पहुंचने में भी सहायक थे। इसके साथ ही, कारीगरों, कारखानदारों और अन्य हितधारकों के साक्षात्कारों ने उचित संदर्भ और उनके अंतर्संबंधों के साथ-साथ इस उद्योग के विभिन्न पहलुओं की समझ के विवरण, व्याख्या और विकास के लिए महत्वपूर्ण इनपुट प्रदान किए।

जरदोजी उद्योग में कई बाधाएं हैं और एलपीजी के आधुनिक युग यानी उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण में व्यावहारिक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इसलिए, अध्ययन के विषय की उचित गहन जानकारी विकसित करने के लिए यह मिश्रित दृष्टिकोण अनिवार्य था।

इस उद्योग के लोगों के विभिन्न समूहों और हितधारकों के व्यवहार, विश्वास प्रणालियों, सामाजिक संरचना, अर्थव्यवस्था, स्वास्थ्य स्थिति, समस्याओं के बारे में प्रासंगिक वास्तविक विश्व बहुआयामी ज्ञान प्रदान करने के लिए चर को चुना गया था। परिणामों ने श्रमिकों और उद्योग की वर्तमान स्थिति में सुधार के लिए सिफारिश का आधार प्रदान किया।

डेटा विश्लेषण और इसकी व्याख्या

सर्वेक्षण से पता चला कि मोहम्मडन और हिंदू दोनों समुदाय इस काम में शामिल हैं। सर्वेक्षण में लखनऊ में अध्ययन के लिए 100 शिल्पकारों का साक्षात्कार लिया गया।

तालिका 1: शिल्प व्यक्तियों का धर्म

	उत्तरदाताओं	
धर्म	संख्या	प्रतिशत (%)
हिंदू	13	13
मुसलमान	87	87
कुल	100	100

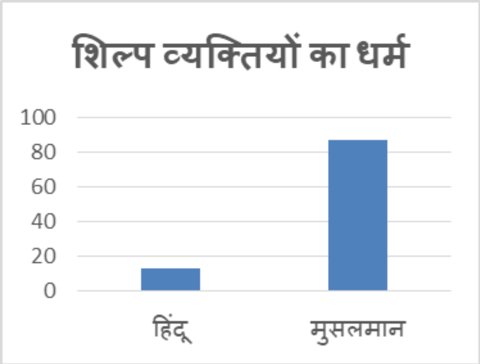

आकृति 1. शिल्प व्यक्तियों का धर्म

सामाजिक स्थिति

आय के अलावा, सामाजिक स्थिति और काम के बारे में लोगों का दृष्टिकोण प्रमुख कारक हैं जो नौकरी या पेशे को चुनने या जारी रखने के लिए किसी व्यक्ति की पसंद को निर्धारित करते हैं। इसलिए, प्रश्नावली के प्रश्नों के इन सेटों द्वारा शिल्पकारों की सामाजिक स्थिति के विभिन्न पहलुओं की जांच की गई। जब उनसे उनकी सामाजिक स्थिति से संतुष्टि के स्तर के बारे में पूछा गया, तो इन शिल्पकारों ने अलग-अलग तरीके से जवाब दिया।

तालिका 2. शिल्पकार व्यक्ति के परिवार का प्रकार

	उत्तरदाताओं	
परिवार का प्रकार	**संख्या**	**संख्या**
संयुक्त	72	72
एकल/परमाणु	28	28
कुल	100	100

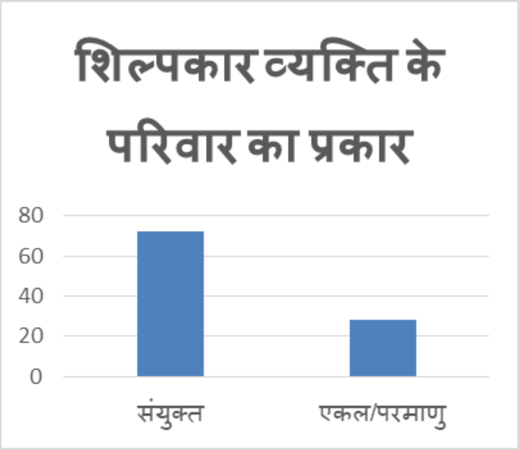

आकृति 2. शिल्पकार व्यक्ति के परिवार का प्रकार

बचत परिदृश्य

अध्ययन में इन शिल्पकारों की बचत पर भी कुछ प्रकाश डाला गया। केवल 9% इस बात से सहमत हैं कि वे अपनी आय से कुछ बचत कर सकते हैं। 12.66% ने सहमत श्रेणी में और 12.33% ने आंशिक रूप से सहमत श्रेणी में प्रतिक्रिया दी। इस प्रश्न में कोई भी तटस्थ नहीं है। 22.66% आंशिक रूप से असहमत हैं, 26% असहमत हैं और 17.33% पूरी तरह असहमत हैं कि वे कुछ बचत कर सकते हैं। जैसा कि तालिका 3 में दिखाया गया है।

तालिका 3. शिल्पकार पैसे बचाते हैं

	उत्तरदाताओं	
जवाब	**संख्या**	**संख्या**
पूर्णतः असहमत (एसडी)	17	17
असहमत(डी)	26	26
आंशिक असहमत(पीडी)	22	22
तटस्थ(एन)	0	0
आंशिक सहमति(पीए)	12	12
सहमत(ए)	12	12
दृढ़तापूर्वक सहमत(एसए)	11	11
कुल	100	100

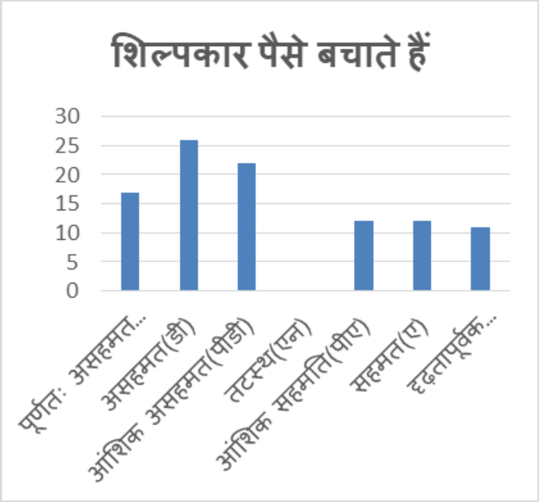

आकृति 3. शिल्पकार पैसे बचाते हैं

क्षेत्र में स्वस्थ एवं सुरक्षित रहने की स्थितियाँ

तालिका 4 से पता चलता है कि शिल्पकारों के रहने वाले क्षेत्र में स्वच्छ पेयजल सुविधाओं के जवाब में केवल 26.33% उत्तरदाताओं ने दृढ़ता से सहमति व्यक्त की कि उनके पास क्षेत्र में पर्याप्त स्वच्छ पेयजल सुविधाएं हैं। 12% उत्तरदाताओं ने सहमति व्यक्त की और 10% आंशिक रूप से सहमत हुए। यह। इस प्रतिक्रिया में 5.66% तटस्थ हैं। जबकि दूसरी ओर, 21% उत्तरदाता पूरी तरह असहमत थे, 14% असहमत थे और 11% आंशिक रूप से असहमत थे। यदि हम एसडी, डी और पीडी पक्षों को जोड़ दें, तो कुल मिलाकर 49% के पास अपने रहने वाले क्षेत्र में स्वच्छ पेयजल की कोई सुविधा नहीं है। यह देखा गया है कि जिन लोगों के पास क्षेत्र में ये सुविधाएं नहीं हैं, उनके घरों में पानी का कनेक्शन नहीं है और ये शिल्पकार अपने उपयोग के लिए अपने घरों के पास की स्थानीय सरकारी आपूर्ति से पानी लाते हैं।

तालिका 4. शिल्पकार के क्षेत्र में पर्याप्त स्वच्छ पेयजल सुविधाएं

	उत्तरदाताओं	
जवाब	संख्या	संख्या
पूर्णतः असहमत (एसडी)	21	21
असहमत(डी)	14	14
आंशिक असहमत(पीडी)	11	11
तटस्थ(एन)	5	5
आंशिक सहमति(पीए)	10	10
सहमत(ए)	12	12
दृढ़तापूर्वक सहमत(एसए)	27	27
कुल	100	100

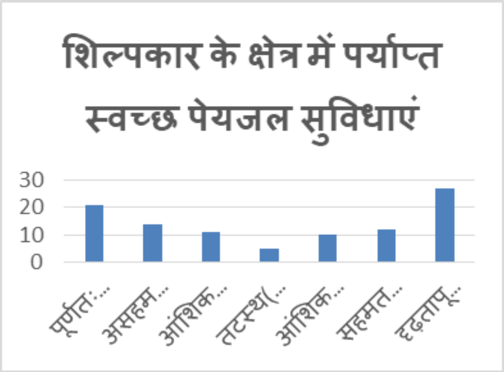

आकृति 4. शिल्पकार के क्षेत्र में पर्याप्त स्वच्छ पेयजल सुविधाएं

शिल्पकार के कार्यस्थल पर समाजवाद और संविधानवाद

तालिका 5 से पता चलता है कि 300 उत्तरदाताओं में से 29% इस कथन से पूरी तरह असहमत हैं कि कार्यस्थल पर धर्म, जाति, लिंग और उम्र के आधार पर शिल्पकारों के बीच कोई भेदभाव नहीं है। 15% और 14% क्रमशः कथन से असहमत और आंशिक रूप से असहमत हैं। केवल 9% उत्तरदाता दृढ़ता से सहमत हैं। 11% सहमत और 12% आंशिक सहमत। 10% उत्तरदाता कथन के प्रति तटस्थ पाए गए, ऐसा प्रतीत होता है कि वे इस संबंध में अपनी राय स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं करना चाहते हैं।

तालिका 5. कार्यस्थल पर धर्म, जाति, लिंग और उम्र के आधार पर शिल्पकारों के बीच कोई भेदभाव नहीं है

	उत्तरदाताओं	
जवाब	संख्या	संख्या
पूर्णतः असहमत (एसडी)	29	29
असहमत(डी)	15	15
आंशिक असहमत(पीडी)	14	14
तटस्थ(एन)	10	10
आंशिक सहमति(पीए)	12	12
सहमत(ए)	11	11
दृढ़तापूर्वक सहमत(एसए)	9	9
कुल	100	100

आकृति 5. कार्यस्थल पर धर्म, जाति, लिंग और उम्र के आधार पर शिल्पकारों के बीच कोई भेदभाव नहीं है

निष्कर्ष

लखनऊ में ज़री ज़रदोज़ी उद्योग के सामने आने वाली चुनौतियाँ बहुआयामी हैं और समाधान के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता है। आर्थिक दबाव, तकनीकी प्रगति और बदलती उपभोक्ता प्राथमिकताएँ इस पारंपरिक शिल्प में शामिल कारीगरों और व्यवसायों के लिए महत्वपूर्ण बाधाएँ पैदा करती हैं। उद्योग की स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए, सहायक नीतियों को लागू

www.ignited.in

करना, कौशल विकास के अवसर प्रदान करना और बाजार संबंधों को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त, जरी जरदोजी के सांस्कृतिक महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने और डिजाइन में नवाचार को प्रोत्साहित करने से इस सदियों पुराने शिल्प को पुनर्जीवित और पुनर्जीवित करने में मदद मिल सकती है। इन चुनौतियों से पार पाने और लखनऊ में ज़री ज़रदोज़ी उद्योग के समृद्ध भविष्य का मार्ग प्रशस्त करने के लिए सरकारी निकायों, गैर-लाभकारी संगठनों और उद्योग हितधारकों के बीच सहयोग अनिवार्य है।

सन्दर्भ

1. बसंत, टी. और गोयल, ए. (2013)। ज़री कढ़ाई- चमकदार कढ़ाई की एक कला। कपड़ा रुझान, 56(4), 40।
2. गौस, एस.एम., 2012. भारतीय हस्तशिल्प उद्योग: समस्याएं और रणनीतियाँ। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मैनेजमेंट रिसर्च एंड रिव्यूज, 2(7), पृष्ठ 1183।
3. होए, डब्ल्यू., 2011. उत्तरी भारत में व्यापार और विनिर्माण पर एक मोनोग्राफ। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.
4. हरादा, एन., 2004। नई जापानी फर्मों में उत्पादकता और उद्यमशीलता विशेषताएँ। लघु व्यवसाय अर्थशास्त्र, 23(4), पीपी.299-310।
5. मेंगरसन, बी., 2013. सस्टेनेबिलिटी+ नीडलक्राफ्ट = टेक्सटाइल टेक्नोलॉजी: क्या 'नीडलक्राफ्ट' कौशल की वापसी से टेक्सटाइल में सतत अभ्यास में वृद्धि हो सकती है? भविष्य के लिए प्रौद्योगिकी शिक्षा: स्थिरता पर एक नाटक।
6. शर्मा दशरथ. (1966) युगों से राजस्थान। बीकानेर राजस्थान स्टेट अचीवर्स, अध्याय 3, पृ. 33.
7. स्वरूप, एस. (2012)। नवाबों के युग से आधुनिक काल तक अवध की वेशभूषा और वस्त्र। रोली बुक्स, नई दिल्ली।
8. स्ट्रैसडिन, के., 2012. एम्पायर ड्रेसिंग- रानी एलेक्जेंड्रा के कोरोनेशन गाउन का डिजाइन और कार्यान्वयन। जर्नल ऑफ़ डिज़ाइन हिस्ट्री. वॉल्यूम. 25 नंबर 2
9. टैवर्नियर, जीन-बैप्टिस्ट, (2019), ट्रेवल्स इन इंडिया अनुवादित वी. बॉल, संपादित विलियम क्रुक, टैवर्नियर ट्रेवल्स इन इंडिया, 2 खंड। ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटि प्रेस।
10. थॉमस, एन.जे., 2007। शाही तमाशा का प्रतीक: ड्रेसिंग लेडी कर्जन, भारत की वाइसरीन 1899-1905। सांस्कृतिक भूगोल 14(3): 369-400

Corresponding Author

Samriddhi Kushwaha*

Research Scholar, Bhagwant University

www.ignited.in